Date: 27/1/2022

Lecture No:- 27
Series:-

TOPIC,

Dr. Sunitakumari
Dept. of Philosophy
B.A Part-I paper-(S)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur,

(F) Syadvada,

Ans:- जैन दर्शन के अनुसार वस्तुओं के अनन्त धर्म होते है। अनन्त धर्मकम् वस्तु। हम किसी भी वस्तु के जितने गुणों या लक्षणों को जानते है, उतने ही गुणों या लक्षण उस वस्तु में नहीं होते वस्तु के अनन्त धर्म को जानना हमारे लिए संभव नहीं है।

यह जैन का अनेकांतवाद है। अतः चूंकि हम वस्तु के अनन्त धर्म को नहीं जान सकते है, अतः यह कहा जा सकता है कि वस्तु को हम सही-सही नहीं जानते है।

अतः वस्तुओं के विषय मे हमारा ज्ञान एकांगी है। यहाँ जैनदर्शन का स्यादवाद हमारी सहायता करता है।

स्यादवाद कहलाता है कि हम निरपेक्ष

P.T.O.

रूप से नहीं कह सकते हैं। या नहीं
स्याद्वाद जैन दर्शन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंग है।

इसकी धारणा है कि सत् का स्वरूप अत्यधिक अनियत है। 'स्यात्' शब्द संस्कृत की 'अस' धातु (होना) की विधिलिंग का एक रूप है। इसका अर्थ है - हो सकता है। शायद। इसलिए स्याद्वाद शायद का सिद्धांत है।

इस सिद्धान्त का तात्पर्य है कि वस्तु को अनेक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है और प्रत्येक दृष्टिकोण से एक भिन्न निष्कर्ष प्राप्त करता है।

किसी भी वस्तु के सम्बन्ध में हमारा जो निर्णय होता है, वह सभी दृष्टियों से सत्य नहीं होता है, साधारणतः सिद्धान्त को भूल जाते हैं और अपने विचारों को सर्वथा सत्य (मानते) मानने लगते हैं। इसे एक महत्वपूर्ण उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

P.T.O.

वे अंधे हाथी के आकार का ज्ञान जानने के उद्देश्य से हाथी के अंगों को स्पर्श करते हैं।

कोई उसका पेट, कोई पैर, कोई कान, कोई पूँछ तथा कोई सूंड पकड़ता है।

प्रत्येक अंधा सोचता है कि उसी का ज्ञान सब कुछ है शेष गलत है। किन्तु जैसे सूंड पकड़ता है। प्रत्येक अन्धा सोचता है कि उसी का ज्ञान सब कुछ है शेष गलत है।

परन्तु जैसे ही उन्हें गलत विश्वास दिलाया जाता है कि प्रत्येक ने हाथी का एक भिन्न स्पर्श किया है, उनका मतभेद दूर हो जाता है।

नय एक दृष्टिकोण है जिसके आधार पर हम किसी पदार्थ के विषय में कोई कथन करते हैं।

स्याद्वाद के संबंध में दो तरह के मत देखने को मिलते हैं पहला मत उपनिषद का था कि सत् ही तत्व है। दूसरा मत छान्दोपनिषद का किन्तु असत्...